अनुक्रमणिका

भंग के रंग

कुण्डली मिलान

कोई व्यक्ति धर्म के लिए कार्य क्यों करें?

हमनें ईश्वर को क्या दिया?

तिथि विचार

धर्मप्रचार में आप भी हमारे सहयोगी बन सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

Mahesh Batish, Vishavkarma Nagar, Main Street,
Mandi Gobindgarh-147301 (Punjab) India
Ph.: 01765- 506521
E-mail : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com
Visit our Home page at : www.geocities.com/dharamvichar

भंग के रंग

'जय जय शिव शंकर, कांटा लगे न कंकर कि प्याला तेरे नाम का पीया' भगवान के नाम का प्याला पीने में आनन्द तो है लेकिन प्याला किस तरह का हो इस बात का काफी महत्व है। काफी वर्ष पहले की बाते हैं, जब शिवरात्रि के दिन मन्दिर से भंग का प्रसाद लेने की उत्सुकता बनी रहती थी। नियमित रुप से मन्दिर तो जाते ही थे, शिवरात्रि के दिन इस आशा से चले जाते थे कि भगवान भोलेनाथ का प्रसाद मिल जायेगा, जो कि अक्सर मिलता नहीं था। मन्दिर में कुछ भक्त एक कमरे में अपना प्रसाद घोटते तथा अकेले ही ग्रहण कर लेते तथा हमें बाहर से ही टरका देते। हमें बुरा लगा कि भगवान के प्रसाद में यह भेदभाव क्यों, खासकर जब प्रसाद मन्दिर में बन रहा हो। हमने घर में ही अपना प्रसाद बनाना शुरु कर दिया। कुछ वर्षों तक प्रसाद बनाते रहे। पिताजी इस मामले में काफी सहयोग करते थे। बादाम, खसखस घोट कर, दूध डालकर ऊपर से दो पत्ते भांग के डाल देते तथा दो–दो घूण्ट पी लेते। ऐसा करने से सन्तुष्टि मिल जाती कि भगवान का प्रसाद पा लिया है। जैसे स्कूल की क्लासें होती हैं वैसे भक्ति की क्लासें भी होती हैं। भक्ति की कुछ क्लासें करने पर भगवान में तो रुचि बढ़ने लगी लेकिन भांग के प्रसाद में रुचि कम होने लगी।

भंग का प्रसाद, जो कि साल में मात्र एक बार लेते थे, नशे के लिए तो नहीं लेते थे लेकिन अगर कभी नशा हो जाता तो बहुत गड़बड़ हो जाती। एक

बार प्रसाद कुछ कड़ा हो गया तो मस्ती में आकर घर से निकल गये। सामने एक मित्र मिल गया, उसके स्कूटर के पीछे बैठकर शहर की गलियों में घुमने लगे। एक–डेढ़ घण्टा जब पीछे बैठे उसे दायें–बायें का दिशा–निर्देश देते रहे तो मित्र को अनुभव हुआ कि वैसे तो बंदा ठीक है लेकिन आज इसके साथ कुछ गड़बड़ है। वह चुपचाप हमें घर छोड़ गया। घर में पूजा चल रही थी। पूजा में बैठ गये। कुछ देर में पूजा समाप्त हुई तो आरतियों की एक किताब उठाई तथा पहले पृष्ठ से शुरु होकर पच्चीस–तीस जितनी आरतियां थी सब कर डाली। हमारे एक मित्र को भंग चढ़ गई तो वह दूसरे मित्र के घर पहुँच गया और घण्टी मारने की बजाय अपना साईकिल ही उसके दरवाजे पर दे मारा। उन दिनों हमें साईकिल ही मिला करते थे, स्कूटर को तो बच्चों को हाथ भी नहीं लगाने देते थे। धीरे–धीरे बच्चों को स्कूटर, फिर कार चलाने की आजादी भी मिलने लगी। कई बार किसी कार को देखकर आश्चर्य होता है कि अरे! यह कार बिना ड्राईवर के कैसे चल रही है। ध्यान से देखने पर पता चलता है कि इसे कोई छोटा बच्चा चला रहा है जो कुछ देर पहले इसलिए दिखाई नहीं दिया क्योंकि वह एक्सीलेटर दबाने सीट के नीचे गया था। अरे यह क्या! बच्चा तो फिर से गायब हो गया। गायब नहीं हुआ वह फिर से सीट के नीचे ब्रेक लगाने गया है। खैर।

शिवरात्रि की रात को वैसे तो जागकर पूजा करने का विधान है लेकिन भांग के नशे में नींद भी आ जाती है और सोते हुए ऐसा लगता है जैसे भोलेनाथ

ने मंजे के पावे को अपने चिमटे में फंसा कर हवा में झुला दिया हो। जी खराब होना, मितली होना, खाना न खाया जाना, चक्कर आना इत्यादि भी भांग से होता है।

भोलेनाथ नीलकंठ क्यों बने?

धीरे–धीरे यह अनुभव होने लगा कि भगवान की भक्ति ही काफी है, भंग का प्रसाद लेने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है। भक्ति की क्लासें जब बढ़ती हैं तो भगवान कुछ बुद्धि भी दे देते हैं। मन में आया कि भगवान भोलेनाथ, नीलकंठ क्यों बने? समुद्र मन्थन से जब भयंकर कालकूट विष निकला तो सब लोक उस विष के प्रभाव से त्रस्त हो गये। अमृत पाने के लिए देव–दानव समुद्र मन्थन कर रहे थे लेकिन जब विष प्रकट हो गया तो उसे कौन ग्रहण करे? समुद्र मन्थन वास्तव में सुख प्राप्ति के प्रयासों का प्रतीक है। अमृत सुख है, विष दुख है। सुख के साथ दुख भी जुड़ा हुआ है, लेकिन सब सुख ही चाहते हैं, दुख से भागते हैं। उस समय सबने भोलेनाथ से प्रार्थना करी कि प्रभु इस विष का कुछ उपाय करो। भोलेनाथ उस विष को पी गये। साधारण जीव तो विष के प्रभाव से मर जाते हैं लेकिन जो मृत्यु की भी मृत्यु हो उसका विष क्या बिगाड़े? भगवान ने विष को अपने कंठ में धारण कर लिया तथा नीलकंठ बन गये।

भगवान ने विषपान इसलिए किया ताकि सृष्टि के जीवों की विष के प्रभाव से रक्षा हो सके। समस्त तरह के नशे विष का ही रुप हैं। भांग, शराब,

अफीम, चाहे अन्य भी किसी भी तरह का नशा क्यों न हो एक तरह से धीमा विष ही है। भगवान ने जिस विष से हमारी रक्षा की उसका सेवन करना हमारे लिए उचित नहीं है। अगर हम ऐसा करते हैं तो हम भगवान की इच्छा की अवज्ञा ही करते हैं क्योंकि हमें विष से बचाने के लिए ही तो भगवान स्वयं नीलकंठ बन गये।

भगवान का भी अपना ही नशा है।

धन का, सत्ता का, सामर्थ्य का, सुन्दरता का सबका अपना–अपना नशा होता है। लेकिन भगवान का नशा इन सबसे बढ़कर है। यह श्रेष्ठ भी है क्योंकि यह नशा सबका कल्याण करने वाला तथा सबको सुख देने वाला है। 'नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन–रात' यानि भगवान के नाम का ही हरदम अभ्यास करते रहें तो इससे अच्छा क्या होगा। संसार में सब तरह के रस, सब तरह के सुख थका देने वाले हैं। एकमात्र भगवद् रस ऐसा है जो सदैव स्फूर्ति देता है, सदैव नया रहता है। जो भगवद् रस का एक बार सेवन कर लेता है वह फिर कभी इस रस से विमुख नहीं होता। भगवान की प्राप्ति का प्रयत्न करते हुए हम साधनों से ऊब सकते हैं। बहुत जप किया, बहुत तप किया, व्रत किये, अनुष्ठान किये, भगवान नहीं मिले तो इनसे ऊब गये। लेकिन ये सब भगवान की प्राप्ति के साधन हैं। रस इनमें भी मिलता है लेकिन जब तक परम रस का अनुभव न हो जाये तब तक इनका रस भी स्थाई नहीं होता। एक बार जब परम रस की

प्राप्ति हो जाती है तो व्यक्ति उसे छोड़ना नहीं चाहता।

भगवान भोलेनाथ आधी बंद आंखों से ध्यान करते रहते हैं। इसे तुरीयावस्था भी कहते हैं। जब साधक इस अवस्था में पहुंच जाता है तो वह बाहरी तथा आन्तरिक दोनों जगतों में रहते हुये भी इनसे परे रहता है। इस अवस्था में साधक को सहज ही परम रस का अनुभव होता रहता है। पहले यह अवस्था थोड़ी देर के लिए आती है। फिर प्रयास करते रहने से इसका समय तथा तीव्रता बढ़ते रहते हैं। जब साधक का चित्त शान्त हो प्रभु में ही लीन हो जाता है तो यह अवस्था स्थाई बन जाती है। फिर इस अवस्था की प्राप्ति के प्रयत्न करने की भी आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि यह साधक की सहज वृत्ति बन जाती है। भक्ति की यह सहजवृत्ति ही एकमात्र ऐसा नशा है जो श्रेष्ठ है अन्य सब नशे तो निकृष्ट तथा पतन करवाने वाले ही हैं। हे भगवान! हमें अपनी भक्ति की भंग के रंग में ही रंग लो, अपने सोटे को ऐसा चलाओ जिससे हमारे राग–द्वेषादि समस्त दुर्गुण दूर हो जायें, हमारे चित्त को ऐसा छानों कि कोई सूक्ष्म विकार भी हममें न रहे और भक्ति की मस्ती ऐसी हो जो कभी न उतरे। यही हमारे लिए आपका सबसे उत्तम प्रसाद होगा। प्रभु बस ऐसी ही कृपा करो।

कुण्डली मिलान

विवाह से पूर्व वर–कन्या की कुण्डली का मिलान किया जाता है। कुण्डली मिलान क्या है? आज हम इस विषय पर बात करेंगे। कुण्डली मिलाने के लिए मुख्यतः गुण मिलान तथा मांगलिक का विचार किया जाता है।

1. गुण मिलान : कुल 36 गुण होते हैं। 36 में से कम से कम 18 गुणों का मिलना आवश्यक है। गुणों का मिलान वर–कन्या के जन्म नक्षत्र के आधार पर किया जाता है।

2. मांगलिक विचार : अगर वर या कन्या मांगलिक हो तो उसका विवाह मांगलिक कन्या या वर से किया जाता है, ऐसी प्रथा है। मांगलिक का विचार गुणों से अलग किया जाता है। गुणों के ज्यादा–कम मिलने से मांगलिक होने या न होने का कोई सम्बन्ध नहीं होता। पिछले अंकों से आपको जन्मलग्न के बारे में जानकारी तो हो ही गई होगी। जन्मलग्न के पहले, चौथे, सातवें, आठवें तथा बारहवें भाव में मंगल के आ जाने से जातक को मांगलिक माना जाता है। कुछ मामलों में किसी अन्य ग्रह की स्थिति के कारण मांगलिक भंग भी मान लिया जाता है या फिर आयु विशेष के बाद मंगल का प्रभाव कम हो जाता है ऐसा माना जाता है। लेकिन मांगलिक भंग होने के बारे में ज्योतिषियों की अपनी–अपनी राय है।

गुण मिलान का विस्तार :

मिलान के लिए कुल 36 गुण होते हैं। इन 36 गुणों को 8 भागों में विभाजित किया गया है। गुणों के क्रम के हिसाब से ही उनके अंक भी दिये जाते हैं। गुणों का क्रम इस प्रकार है (क्रम संख्या ही गुणों द्वारा प्राप्त अधिकतम अंक है।) :

1. वर्ण, 2. वश्य, 3. तारा, 4. योनि, 5. ग्रहमैत्री,

6. गण, 7. भकुट, 8. नाड़ी

1. गण : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार वर्ण माने गये हैं। गुण मिलान में वर का गण वधु के बराबर या उच्च होने पर 1 अंक मिलता है, अन्यथा शून्य मिलता है।

2. वश्य : इसके अधिकतम अंक 2 हैं। चतुष्पद, कीट, सर्प, द्विपद तथा जलचर ये वश्य हैं। इनके मिलान से 1, 1 1/2, 2 या शून्य अंक मिलता है।

3. तारा : तारा के अधिकतम 3 अंक मिलते हैं। कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तथा वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गणना करने से तारा की स्थिति पता चलती है। शुभ तारा के तीन गुण, एक शुभ दूसरी अशुभ तारा से 1 1/2 तथा दोनों तारा अशुभ होने से शून्य अंक मिलता है।

4. योनि : योनि के अधिकतम 4 अंक मिलते हैं। वर–कन्या की योनि एक होने पर 4, अन्य स्थिति में भी 4,3,2,1 अथवा शून्य अंक मिल सकता है।

5. ग्रह मैत्री : ग्रह मैत्री के अधिकतम 5 गुण हैं। वर–कन्या की राशियों के

स्वामियों के आपसी सम्बन्ध के आधार पर ग्रह मैत्री के अंक दिये जाते हैं। दोनों की एक ही राशि अथवा मित्र राशि होने पर 5, एक राशि सम दूसरी मित्र होने पर 4, दोनों के सम होने पर 3, शत्रु होने पर 0, एक शत्रु दूसरी मित्र होने पर 1, एक सम दूसरी शत्रु होने पर 1/2 अंक दिया जाता है।

6. गण : गण के 6 अंक हैं। देव, मनुष्य तथा राक्षस तीन गण हैं। वर–कन्या का एक गण होने पर 6 अन्य स्थितियों में 5,1 या शून्य अंक मिलता है।

गण से वर–कन्या के स्वभाव में सांमजस्य का अनुमान लगाया जाता है। उनकी आपस में बहुत बनेगी, कम बनेगी या बनेगी ही नहीं इन बातों का अनुमान गण से लगाया जाता है।

7. भकूट : भकूट के 7 अंक हैं। वर की राशि से कन्या की राशि तथा कन्या की राशि से वर की राशि तक गिनकर भकूट के बारे में जाना जाता है। यदि ये दोनों राशियां एक दूसरे से पाँचवें–नौंवे, दूसरे–बारहवें या छठे–आठवें हों तो इन कूटों को अशुभ माना जाता है, शेष कूट शुभ होते हैं।

दूसरा–बारहवां कूट होने से धन की कमी रहती है, छठा–आठवां होने से रोग, शत्रु तथा मृत्यु का भय रहता है तथा नव–पंचम कूट होने से एक–दूसरे से विरक्ति तथा संतान सुख में बाधा आती है।

8. नाड़ी : नाड़ी के 8 अंक होते हैं। आदि, मध्य, अन्त ये तीन नाड़िया मानी गई हैं। यदि वर–कन्या की नाड़ी एक हो तो शून्य मिलता है अन्यथा 8 अंक मिलते

हैं। नाड़ी स्वास्थय तथा जीवट को प्रभावित करती है।

विशेष : गुण मिलान में अंतिम तीन गुणों : गण, भकूट तथा नाड़ी का सर्वाधिक महत्व है। आपसी स्वभाव के मिलान के लिए गण का ध्यान रखना चाहिए तथा धन, सन्तान, स्वास्थय के लिए भकूट और नाड़ी का मिलान करना चाहिए।

कई बार ऐसा भी मान लिया जाता है कि बनियों को नाड़ी तथा ब्राह्मणों को भकूट दोष नहीं लगता। ऐसे में जिसकी जैसे मान्यता है वह वैसा समझने के लिए स्वतन्त्र है लेकिन स्वास्थ, धन, संतान तो सबको ही चाहिए, ऐसे में वर्ण विशेष के लिए दोष का होना या न होना कैसे निश्चित किया जा सकता है। बाकी सारा खेल तो ईश्वर का ही रचा हुआ है वास्तविकता भी वे ही जानें।

कोई व्यक्ति धर्म के लिए कार्य क्यों करे?

धर्म के लिए कुछ करना ईश्वर की आराधना करना ही है। जैसे ईश्वर का ध्यान करने से आपको शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त होती है वैसे ही जब आप धर्म के लिए कहीं भी बैठे हुये कुछ भी करते हैं तो आपको सहज शांति तथा ईश्वरीय प्रसन्नता मिलती है। हमसे से कुछ समाज में खराब हो रही परिस्थितियों के बारे में हैरानी व्यक्त करते हैं। घोर कलियुग आ गया है, ऐसा मान लिया जाता है। समाज से, परिवार से, कार्य से, कमाई से, मित्रों से, सम्बन्धियों से हमारे असंतोष का आखिर कारण क्या है? उत्तर सरल है, हम अपने धर्म पर दृढ़ता से कायम नहीं हैं। आपको आश्चर्य होगा कि धर्म का पालन करने से, मन्दिर जाने से, पूजा करने से, ग्रन्थ पढ़ने से हम सुखी कैसे रह सकते हैं! शायद आप ऐसा सोचने में ठीक भी हों, लेकिन जरा सोचिए कि नैतिकता का आधार क्या है? अगर कोई व्यक्ति कानूनी तौर पर गलत नहीं है लेकिन नैतिक रुप से गलत है तो क्या ऐसे व्यक्ति को सरकार कोई सजा दे सकती है? मैं नहीं समझता कि सरकार के पास ऐसा कोई अधिकार है। नैतिकता एक ऐसा गुण है जिसे बाहर से नहीं थोपा जा सकता, यह अन्दर से ही विकसित होता है। हम बच्चों की नैतिक शिक्षा की कक्षायें ले सकते हैं, इसका एक विषय की तरह अध्ययन किया जा सकता है, लेकिन इससे कोई बहुत ज्यादा गारंटी नहीं मिलती। नैतिकता को सबसे बड़ा समर्थन धर्म तथा भगवान से ही मिलता है। धर्म सबसे अच्छे तरीके से हमें

नैतिकता के विषय में शिक्षा देता है।

कुछ लोग परेशान हैं क्योंकि बच्चे उनका कहना नहीं मानते, कुछ इसलिए परेशान हैं कि उनके माँ–बाप उनकी दृष्टि में उतने अच्छे नहीं है जितने होने चाहिए, कहीं किसी पति–पत्नी में छतीस का आंकड़ा रहता है, कोई अपने आप से ही सन्तुष्ट नहीं है, कोई अपनी प्राप्तियों से सन्तुष्ट नहीं है, किसी को दोस्त मौसम ही तरह आने–जाने वाले लगते हैं, तो कोई रिश्ते–नातों को झूठ मानता है। हे भगवान! कितनी अफरा–तफरी है। शायद हम अपने कर्त्तव्यों को ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं या फिर हमारी आशायें ही ऐसी हैं जो कि फलित नहीं होती। लेकिन कोई इस बात को स्वीकार नहीं करेगा। शायद हमसे से बहुत से सही हैं लेकिन 'दूसरों' की गलतियों के कारण परेशान है। अब परेशानी यह है कि उन 'दूसरों' को कैसे समझाया जाये कि उन्हें दूसरों को सुख तथा शान्ति देनी है न कि परेशानी।

यहीं पर धर्म का महत्व समझ में आता है। धर्म के पास दंड देने का कोई कानूनी अधिकार नहीं है लेकिन फिर भी धर्म का चक्र चलता है। धर्म किसी को दंड नहीं देता बल्कि यह सबको अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनने के लिए प्रेरित करता है। अच्छे–बुरे, सही–गलत का बोध हमें धर्म से ही होता है। अगर कोई सुख चाहता है तो धर्म का संदेश है कि दूसरों को सुख दो इससे तुम्हे भी सुख मिलेगा, इससे संसार में सुख की वृद्धि होती है। इसलिए सत्यधर्म के

प्रचार–प्रसार के लिए जब भी कुछ किया जा सके अवश्य करें, इसी में सबका कल्याण है।

हमने ईश्वर को क्या दिया?

हमारे मन में हर समय कोई न कोई कामना बनी रहती है। अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए हम ईश्वर से प्रार्थना भी करते रहते हैं। कई बार हमारे ईश्वर के प्रति प्रेम से ज्यादा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की भावना ही हमारे समर्पण को प्रभावित करती है। एक छोटी सी कहानी इस बात को ज्यादा अच्छे तरीके से समझाती है :

एक राजा अपने राज्य के भ्रमण पर निकला था। राजा दयालु, बुद्धिमान तथा प्रजा का संतानवत् पालन करने वाला था। जिस रास्ते से वह जा रहा था उसी रास्ते में एक भिक्षुक की झोपड़ी आती थी। भिक्षुक को जब पता चला कि राजा उसकी झोपड़ी के पास से गुजरेगा तो वह प्रसन्न हो गया। 'आज मेरी झोपड़ी के पास से गुजरते हुये राजा न जाने मुझे क्या दे दे' यह विचार कर भिक्षुक मन ही मन प्रसन्न तथा रोमांचित हो रहा था। वह बड़ी ही व्यग्रता से राजा के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। राजा का स्वभाव था कि वह खुले मन से याचकों को कृतार्थ कर दिया करता था। कुछ पाने की कामना के कारण राजा के प्रति भिक्षुक का स्नेह सागर की लहरों की तरह उमड़ रहा था। तुलसीकृत रामचरितमानस में शिव पार्वती से ठीक ही कहते हैं –

उमा राम सम हित जग माहीं। गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं।।
सुर नर मुनि सब कै यह रीती। स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।। –4/11/1

भिक्षुक का राजा से धन पाने का स्वार्थ था इसलिए वह राजा के अति विशेष स्नेह अनुभव कर रहा था। जब राजा का कारवां भिक्षुक की झोपड़ी के पास आया तो महाराज की जय हो! कहता हुआ भिक्षुक दौड़कर राजा के रथ के समीप पहुंच गया। भिक्षुक को दौड़कर आता देख राजा ने अपने सारथी को रथ रोकने का संकेत दिया। 'तुम कौन हो और क्या चाहते हो?' राजा ने पूछा। 'महाराज! मैं आपके राज्य का एक अभागा व्यक्ति हूँ। मैं इतना निर्धन हूँ कि मुझे भिक्षा मांगनी पड़ती है। दरिद्रता का तो जैसे मेरे घर में स्थाई निवास हो गया है। मैं जहां भी जाता हूँ यह दरिद्रता मेरा पीछा नहीं छोड़ती। कल से मैनें कुछ खाया भी नहीं है। मुझ पर कृपा करें। महाराज!' भिक्षुक अत्यन्त दीनभाव से बोला।

'क्या तुम्हारे पास अपने राजा को देने के लिए इस व्यथा कथा के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसके अतिरिक्त तुम मुझे जो दे सकते है वह दो।' यह कहकर राजा ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। भिक्षुक राजा की बात सुनकर हैरान हो गया। उसका भिक्षापात्र चावलों से भरा हुआ था। भिक्षुक ने चावलों की एक चुटकी उठाई तथा राजा के बढ़े हुये हाथ पर रख दी। भिक्षुक के चुटकी भर चावल लेकर राजा आगे बढ़ गया।

भिक्षुक को राजा के व्यवहार से बड़ा क्षोभ हुआ। वह राजा की बुराईयां करने लगा तथा लोगों को राजा के बारे में भला–बुरा कहने लगा। सारा दिन भिक्षा मांगकर जब शाम को वह अपनी झोपड़ी में वापिस आया तो देखता है कि चावलों

की एक बोरी उसकी झोपड़ी के द्वार पर पड़ी है। भिक्षुक समझ गया कि यह चावल राजा ने ही भेजे है। उसने बोरी खोलकर देखा तो अन्दर कागज की एक पुड़िया भी थी। पुड़िया खोली तो उसमें सोने के चावल थे लेकिन मात्र चुटकी भर! बिल्कुल उतने जितने भिक्षुक ने राजा को दिए थे। भिक्षुक यह देखकर बहुत पछताया। उसने सोचा,'मैं व्यर्थ ही राजा की बुराई करता रहा, उन्हें कंजूस कहता रहा। वास्तव में कंजूस राजा नहीं कंजूस तो मैं हूँ। अगर राजा के प्रति अपने समर्पण को दृढ़ करता हुआ मैं अपना पूरा कटोरा ही राजा को दे देता तो आज मैं एक धनी व्यक्ति होता। राजा ने बिना स्वार्थ के ही मुझे इतना कुछ दे दिया। लेकिन जब मेरी देने की बारी थी तो अपना स्वार्थ होते हुये भी मैनें कुछ नहीं दिया।'

मनुष्य का स्वभाव भी बहुत–कुछ उस भिक्षुक जैसा ही है। पहले वह ईश्वर की अनुनय–विनय करता रहता है। लेकिन जब ईश्वर देने आते हैं तो वह अपना–आप समेट कर बैठ जाता है तथा बाद में पछताता रहता है। मनुष्य के पास देने के लिए कुछ है भी नहीं, जो कुछ है उसी ईश्वर का ही दिया हुआ है लेकिन फिर भी स्वयं से उसका इतना ममत्व रहता है कि समर्पण का पूर्ण भाव उसमें विकसित हो ही नहीं पाता। जो कोई विरले अपना–आप छोड़कर ईश्वर के अर्पित हो जाते हैं ईश्वर उन्हें स्वयं को ही देते हैं और इससे बढ़कर वह क्या देंगे।

तिथि विचार

11 मार्च 2005 से 8 अप्रैल 2005 तक

विक्रमी संवत 2061, शक संवत 1926, वसन्त ऋतु, सूर्य उत्तरायण

11 मार्च 2005 दिन शुक्रवार, शुक्लपक्ष। एकम् तिथि दोपहर 12:16 तक रहेगी, उत्तरभाद्रपद नक्षत्र 12 की प्रातः 1:33 पर समाप्त। सूर्योदय 6:41 पर होकर सांय 6:24 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 20 तथा प्रविष्टी फाल्गुन की तिथि 28 है।

12 मार्च 2005 दिन शनिवार, शुक्लपक्ष। द्वितीया तिथि प्रातः 10:24 तक रहेगी। रेवती नक्षत्र रात्रि 12:46 पर समाप्त। सूर्योदय 6:40 पर होकर सांय 6:25 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 21 तथा प्रविष्टी फाल्गुन की तिथि 29 है। पंचक समाप्त।

13 मार्च 2005 दिन रविवार, शुक्लपक्ष। तृतीया तिथि रात्रि 9:12 तक रहेगी। अश्विनी नक्षत्र रात्रि 12:42 पर समाप्त। सूर्योदय 6:39 पर होकर सांय 6:25 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 22 तथा प्रविष्टी फाल्गुन की तिथि 30 है।

14 मार्च 2005 दिन सोमवार, शुक्लपक्ष। चतुर्थी तिथि प्रातः 8:44 तक रहेगी, भरणी नक्षत्र 15 की प्रातः 1:23 पर समाप्त। सूर्योदय 6:38 पर होकर सांय 6:26 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 23 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 1 है।

15 मार्च 2005 दिन मंगलवार, शुक्लपक्ष। पंचमी तिथि प्रातः 9:03 तक रहेगी, कृत्तिका नक्षत्र 16 की प्रातः 2:47 पर समाप्त। सूर्योदय 6:37 पर होकर सांय 6:26 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 24 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 2 है।

16 मार्च 2005 दिन बुधवार, शुक्लपक्ष। षष्ठी तिथि प्रातः 10:06 तक रहेगी। रोहिणी नक्षत्र 17 की प्रातः 4:51 पर समाप्त। सूर्योदय 6:35 पर होकर सांय 6:27 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 25 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 3 है।

17 मार्च 2005 दिन गुरुवार, शुक्लपक्ष। सप्तमी तिथि प्रातः 11:47 तक, मृगशिरा नक्षत्र रहेगा। सूर्योदय 6:34 पर होकर सांय 6:28 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 26 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 4 है।

18 मार्च 2005 दिन शुक्रवार, शुक्लपक्ष। अष्टमी तिथि 19 की प्रातः 1:57 तक रहेगी, मृगशिरा नक्षत्र प्रातः 7:25 पर समाप्त। सूर्योदय 6:33 पर होकर सांय 6:28 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 27 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 5 है। होलाष्टक आरम्भ।

19 मार्च 2005 दिन शनिवार, शुक्लपक्ष। नवमी तिथि सांय 4:23 तक रहेगी, आर्द्रा नक्षत्र प्रातः 10:17 पर समाप्त। सूर्योदय 6:32 पर होकर सांय 6:29 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 28 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 6 है।

20 मार्च 2005 दिन रविवार, शुक्लपक्ष। दशमी तिथि सांय 6:51 तक रहेगी। पुनर्वसु नक्षत्र दोपहर 1:15 पर समाप्त। सूर्योदय 6:30 पर होकर सांय 6:30 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 29 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 7 है।

21 मार्च 2005 दिन सोमवार, शुक्लपक्ष। एकादशी तिथि रात्रि 9:11 तक रहेगी। पुष्य नक्षत्र सांय 4:06 पर समाप्त। सूर्योदय 6:29 पर होकर सांय 6:30 पर सूर्यास्त होगा, शक फाल्गुन 30 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 8 है। आमला एकादशी व्रत।

22 मार्च 2005 दिन मंगलवार, शुक्लपक्ष। द्वादशी तिथि रात्रि 11:11 तक रहेगी, आश्लेषा नक्षत्र सांय 6:41 पर समाप्त। सूर्योदय 6:28 पर होकर सांय 6:31 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 1 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 9 है। गोविन्द द्वादशी।

23 मार्च 2005 दिन बुधवार, शुक्लपक्ष। त्रयोदशी तिथि रात्रि 12:46 तक रहेगी, मघा नक्षत्र रात्रि 8:52 पर समाप्त। सूर्योदय 6:27 पर होकर सांय 6:32 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 2 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 10 है। प्रदोष व्रत।

24 मार्च 2005 दिन गुरुवार, शुक्लपक्ष। चतुर्दशी 25 की प्रातः 1:52 तक रहेगी, पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 10:38 पर समाप्त। सूर्योदय 6:25 पर होकर सांय 6:32 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 3 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 11 है।

25 मार्च 2005 दिन शुक्रवार, शुक्लपक्ष। पूर्णिमा 26 की प्रातः 2:29 तक रहेगी, उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 11:53 पर समाप्त। सूर्योदय 6:24 पर होकर सांय 6:33 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 4 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 12 है। श्री सत्यनारायण व्रत, होलाष्टक समाप्त, होलिका दहन।

26 मार्च 2005 दिन शनिवार, कृष्णपक्ष आरम्भ। एकम् तिथि 27 की प्रातः 2:38 तक रहेगी, हस्त नक्षत्र रात्रि 12:41 पर समाप्त। सूर्योदय 6:23 पर होकर सांय 6:34 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 5 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 13 है। वसन्त उत्सव, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब।

27 मार्च 2005 दिन रविवार, कृष्णपक्ष। द्वितीया तिथि 28 की प्रातः 2:18 तक रहेगी, चित्रा नक्षत्र 28 की प्रातः 1:03 पर समाप्त। सूर्योदय 6:22 पर होकर सांय 6:34 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 6 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 14 है।

28 मार्च 2005 दिन सोमवार, कृष्णपक्ष। तृतीया तिथि 29 की प्रातः 1:35 तक रहेगी, स्वाति नक्षत्र 29 की प्रातः 1:01 पर समाप्त। सूर्योदय 6:20 पर होकर सांय 6:35 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 7 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 15 है।

29 मार्च 2005 दिन मंगलवार, कृष्णपक्ष। चतुर्थी तिथि रात्रि 12:30 तक रहेगी, विशाखा नक्षत्र रात्रि 12:38 पर समाप्त। सूर्योदय 6:19 पर होकर सांय 6:35 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 8 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 16 है। श्री गणेश चतुर्थी व्रत।

30 मार्च 2005 दिन बुधवार, कृष्णपक्ष। पंचमी तिथि रात्रि 11:05 तक रहेगी। अनुराधा नक्षत्र रात्रि 11:54 पर समाप्त। सूर्योदय 6:18 पर होकर सांय 6:36 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 9 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 17 है।

31 मार्च 2005 दिन गुरुवार, कृष्णपक्ष। षष्ठी तिथि रात्रि 9:23 तक रहेगी। ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 10:54 पर समाप्त। सूर्योदय 6:17 पर होकर सांय 6:37 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 10 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 18 है।

1 अप्रैल 2005 दिन शुक्रवार, कृष्णपक्ष। सप्तमी तिथि सांय 7:24 तक रहेगी। मूल नक्षत्र रात्रि 9:39 पर समाप्त। सूर्योदय 6:16 पर होकर सांय 6:37 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 11 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 19 है।

2 अप्रैल 2005 दिन शनिवार, कृष्णपक्ष। अष्टमी तिथि सांय 5:14 तक रहेगी। पूर्वषाढ़ा नक्षत्र सांय 8:12 पर समाप्त। सूर्योदय 6:14 पर होकर सांय 6:38 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 12 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 20 है।

3 अप्रैल 2005 दिन रविवार, कृष्णपक्ष। नवमी तिथि दोपहर 2:54 तक रहेगी। उत्तरषाढ़ा नक्षत्र सांय 6:36 पर समाप्त। सूर्योदय 6:13 पर होकर सांय 6:39 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 13 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 21 है।

4 अप्रैल 2005 दिन सोमवार, कृष्णपक्ष। दशमी तिथि दोपहर 12:29 तक रहेगी। श्रवण नक्षत्र सांय 4:55 पर समाप्त। सूर्योदय 6:12 पर होकर सांय 6:39 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 14 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 22 है। पंचक आरम्भ।

5 अप्रैल 2005 दिन मंगलवार, कृष्णपक्ष। एकादशी तिथि रात्रि 10:03 तक रहेगी, धनिष्ठा नक्षत्र दोपहर 3:15 पर समाप्त। सूर्योदय 6:11 पर होकर सांय 6:40 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 15 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 23 है। पापमोचिनी एकादशी व्रत।

6 अप्रैल 2005 दिन बुधवार, कृष्णपक्ष। द्वादशी तिथि प्रातः 7:42 तदन्तर त्रयोदशी 7 की प्रातः 5:30 तक रहेगी, अतएव् त्रयोदशी तिथिक्षय। शतभिषा नक्षत्र दोपहर 1:40 पर समाप्त। सूर्योदय 6:10 पर होकर सांय 6:41 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 16 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 24 है। प्रदोष व्रत।

7 अप्रैल 2005 दिन गुरुवार, कृष्णपक्ष। चतुर्दशी तिथि 8 की प्रातः 3:35 तक रहेगी, पूर्वभाद्रपद नक्षत्र दोपहर 12:17 पर समाप्त। सूर्योदय 6:08 पर होकर सांय 6:41 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 17 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 25 है।

8 अप्रैल 2005 दिन शुक्रवार, कृष्णपक्ष। अमावस 9 की प्रातः 2:03 तक रहेगी, उत्तरभाद्रपद नक्षत्र प्रातः 11:12 पर समाप्त। सूर्योदय 6:07 पर होकर सांय 6:42 पर सूर्यास्त होगा, शक चैत्र 18 तथा प्रविष्टी चैत्र की तिथि 26 है। विक्रमी 2061 पूर्ण।